गाँधी रिसर्च
फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; अगस्त, २०१९

बा-बापू१५०
१८६९-२०१९

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित -

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष-१, अंक ७ □ अगस्त, २०१९

व्यक्ति अपने विचारों से ही बनता है, वो जो सोचता है वही बन जाता है। - महात्मा गाँधी

इस अंक में- .....पृष्ठ

संपादकीय.....

नेटाल पहुँचा १

'Tatva' of Gandhi's philosophy remains same, 'tantra' will differ.....३

आज की समाज रचना - *(डॉ. भवरलालजी जैन)*.....४

फाउण्डेशन की गतिविधियां.....५-८

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक
स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर-सज्जा
भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव - 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मो.: 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई-मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक - अश्विन भामाभाई झाला*
*(*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)*

मुखपृष्ठ छायाचित्र: नौआखली में दंगा प्रभावित क्षेत्रों में अपनी यात्रा के दौरान महात्मा गाँधी, मनु गाँधी, प्रो. निर्मलकुमार बोस, जनवरी १९४७;
सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

संपादकीय...

१५ अगस्त २०१९ को हमने ७३ वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। अवधेय है कि १५ अगस्त १९४७ को हमें स्वतंत्रता मिली थी जो अनेक भारत के सपूतों के साहस, बलिदान एवं शौर्य के कारण हमें प्राप्त हो सकी थी। उनमें महात्मा गाँधी का नाम सर्वोपरि है। सत्याग्रह से प्राप्त यह विश्व की प्रथम अहिंसक आजादी थी। आजादी प्राप्त होने पर जब १५ अगस्त १९४७ को पूरा देश आजादी का जश्न मना रहा था तब एक व्यक्ति ऐसा भी था जो ब्रिटिश शासन से मुक्ति के इस महोत्सव में शामिल नहीं था। वह खामोशी के साथ दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर कोलकाता में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच शांति और सौहार्द कायम करने का प्रयास कर रहा था, वह व्यक्ति थे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी।

महात्मा गाँधी ने आजादी के इस महत्त्वपूर्ण दिन को अनशन कर मनाने का फैसला किया। आजादी से कुछ सप्ताह पहले की बात है। पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कोलकाता में महात्मा गाँधी के पास अपना एक दूत इस आशय के साथ प्रेषित किया कि गाँधीजी दिल्ली आयें और जश्न-ए-आजादी में शरीक हो सकें। दूत आधी रात को गाँधीजी के पास पहुंचा। उसने गाँधीजी से कहा कि वह पंडित नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल का एक महत्त्वपूर्ण पत्र उनके लिए लाया है। गाँधीजी ने उससे पूछा कि क्या उसने भोजन किया है। उसके नहीं कहने पर उन्होंने पहले उस भोजन कराया और फिर पत्र खोलकर देखा। यह महात्मा गाँधी के विराट व्यक्तित्व का एक नमूना था कि उन्होंने पहले आगंतुक को भोजन कराया फिर पत्र में क्या लिखा है यह जानने की कोशिश की।

पत्र में लिखा था कि बापू आप राष्ट्रपिता हैं। १५ अगस्त १९४७ को प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा। हम चाहते हैं कि आप दिल्ली आकर जश्न-ए-आजादी में शरीक हों तथा हमें अपना आशीर्वाद प्रदान करें। पत्र पढ़ने के बाद महात्मा गाँधी ने कहा, 'कितनी मूर्खतापूर्ण बात है, जब बंगाल जल रहा है, हिन्दू और मुस्लिम एक दूसरे को मरने-मारने पर आमादा हैं, एक दूसरे की हत्या कर रहे हैं और मैं कोलकाता के अंधकार में उनकी मर्मान्तक चीखें सुन रहा हूँ, तब मैं कैसे दिल में रोशनी लेकर दिल्ली जा सकता हूँ'? बंगाल में शांति कायम रखने के लिए मुझे यहीं रहना होगा और यदि जरूरत पड़े तो सौहार्द और शांति सुनिश्चित करने के लिए मुझे अपनी जान भी देनी होगी।

गाँधीजी उस दूत को विदा करने के लिए बाहर निकले। वह एक पेड़ के नीचे खड़े थे, तभी एक सूखा पत्ता शाख से टूटकर नीचे गिरा। गाँधीजी ने उसे उठाया और अपनी हथेली पर रखकर कहा...मेरे मित्र! तुम दिल्ली लौट रहे हो। पंडित नेहरू और पटेल को गाँधी क्या उपहार दे सकता है। मेरे पास न तो सत्ता है न सम्पत्ति है। प्रथम स्वतंत्रता दिवस के मेरे उपहार के रूप में यह सूखा पत्ता पंडित नेहरू और पटेल को दे देना। जब गाँधीजी यह बात कह रहे थे तब दूत की आंखें सजल हो गईं। गाँधीजी परिहास के साथ बोले पत्र को गीला कर दिया। यह खुशी से दमक रहा है। अपने आंसुओं से भीगे इस पत्ते को उपहार के रूप में ले जाओ।

यह था गाँधी का बड़प्पन, उनकी भौतिक वस्तुओं के प्रति अरुचि, यश-ख्याति से दूर रहने एवं मन में मानव मात्र के प्रति सेवा की उद्दाम लालसा। सच कहा है- अब कभी कोई दूसरा गाँधी जैसा नहीं आयेगा इस दुनियां में।

धन्यवाद,

डॉ.श्रीप्रकाश पाण्डेय
(सदस्य-संपादकीय मंडल)

‘सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा’

नेटाल पहुँचा

‘खोज गाँधीजी की’ के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे ‘सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा’ से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। दक्षिण अफ्रीका की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण। **– संपादक**

विलायत जाते समय वियोग के विचार से जो दुःख हुआ था, वह दक्षिण अफ्रीका जाते समय न हुआ। माता तो चल ही बसी थीं। मैंने दुनिया का और यात्रा का अनुभव प्राप्त किया था। राजकोट और बम्बई के बीच तो आना-जाना बना ही रहता था। इसलिए इस बार वियोग केवल पत्नी का ही दुःखदायी था। विलायत से आने के बाद एक और बालक की प्राप्ति हुई थी। हमारे बीच के प्रेम में अभी विषय – भोग का प्रभाव तो था ही, फिर भी उसमें निर्मलता आने लगी थी। मेरे विलायत से लौटने के बाद हम दोनों बहुत कम साथ रह पाये थे। और, शिक्षक की तरह मेरी योग्यता जो भी रही हो, परन्तु मैं पत्नी का शिक्षक बना था इसलिए और पत्नी में जो कई सुधार मैंने कराये थे उन्हें निबाह ने के लिए भी हम दोनों साथ रहने की आवश्यकता अनुभव करते थे। पर अफ्रीका मुझे अपनी तरफ खींच रहा था। उसने वियोग को सह्य बना दिया। एक साल के बाद हम फिर मिलेंगे ही न? पत्नी को यह कहकर और सान्त्वता देकर मैंने राजकोट छोड़ा और मैं बम्बई पहुँचा।

मुझे दादा अब्दुल्ला के बम्बईवाले एजेण्ट के जरिये टिकट खरीदना था। पर स्टीमर में कोई केबिन खाली न थी। हालत यह थी कि अगर इस मौके को चूक जाता तो मुझे एक महिने तक बम्बई की हवा खानी पड़ती। एजेण्ट ने कहा, हमने कोशिश तो बहुत की, पर हमें टिकट नहीं मिल सका। आप डेक में जायें तो जा सकते हैं। भोजन की व्यवस्था सलून में हो सकेगी। वह जमाना मेरे लिए पहले दर्जे की यात्रा का था। क्या बारिस्टर डेक का यात्री बन कर जाय? मैंने डेक में जाने से इनकार कर दिया। मुझे एजेण्ट पर शक हुआ। मैं यह मान न सका कि पहले दर्जे का टिकट मिल ही नहीं सकता। एजेण्ट की अनुमति लेकर मैंने ही टिकट प्राप्त करने का प्रयत्न किया। मैं स्टीमर पर पहुँचा। बड़े अधिकारी से मिला। पूछताछ करने पर उसने सरल भाव से उत्तर दिया: हमारे यहाँ इतनी भीड़ शायद ही कभी होती है। पर इस स्टीमर से मोजाम्बिक गवर्नर-जनरल जा रहे हैं, इससे सारी जगहें भर गयी हैं।

तो आप मेरे लिए किसी तरह जगह निकाल ही नहीं सकते?

अफसरने मेरी तरफ देखा। फिर वह हँसा और बोला: एक उपाय है। मेरे केबिन में एक वर्थ खाली रहती है। उसमें हम यात्री को नहीं लेते, पर आपको मैं वह जगह देने के लिए तैयार हूँ। मैं खुश हुआ। अफसर का आभार माना। सेठ से बात करके टिकट कटाया, और १८९३ के अप्रैल महिने में उमंगों से भरा मैं दक्षिण अफ्रीका में अपना भाग्य आजमाने के लिए रवाना हो गया।

पहला बन्दर लामू पडता था। वहाँ पहुँचने में करीब तेरह दिन लगे। रास्ते में कप्तान से अच्छी मित्रता हो गयी कप्तान को शतरंज खेलने का शोक था, पर वह अभी नौसिखुआ ही था। उसे अपने से कमजोर खेलनेवाले साथी की जरूरत थी। इसलिए उसने मुझे खेलने के लिए न्योता। मैंने शतरंज का खेल कभी देखा न था। उसके विषय में सुना काफी था। खेलनेवाले कहते थे कि इस खेल में बुद्धी का खासा उपयोग होता है। कप्तान ने कहा कि वह खुद मुझे सिखायेगा। मैं उसे अच्छा शिष्य मिला, क्योंकि मुझे में धैर्य था। मैं हारता ही रहता था। इससे कप्तान का सिखाने का उत्साह बढ़ता जाता था। मुझे शतरंज का खेल पसन्द पड़ा, पर मेरा यह शौक कभी जहाज के नीचे न उतरा। उसमें मेरी गति राजा-रानी आदि की चाल जान लेने से अधिक बढ़ सकी।

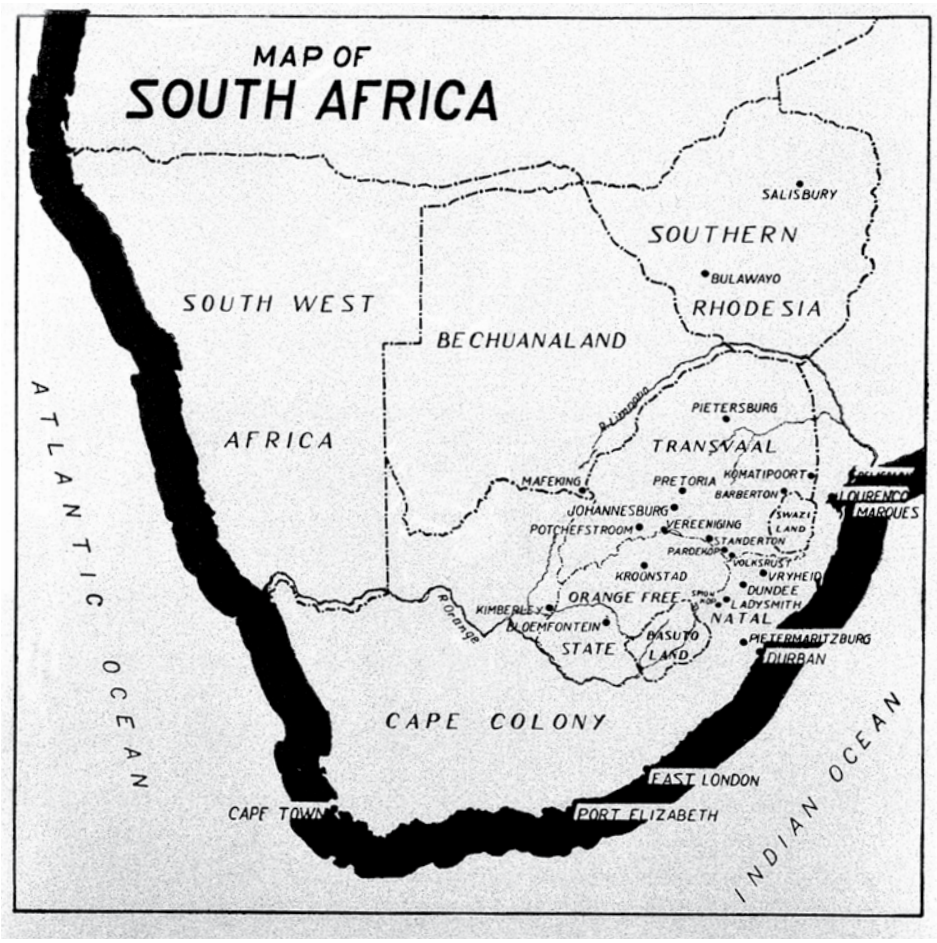

दक्षिण अफ्रिका १८९३-१९१४

लामू बन्दर आया। स्टीमर वहाँ तीन-चार घण्टे ठहरनेवाला था। मैं बन्दर देखने नीचे उतरा। कप्तान भी गया था। उसने मुझ से कहा, यहाँ का बन्दर दगाबाज तुम जल्दी लौट आना।

गाँव तो बिलकुल छोटा-सा था। वहाँ के डाकखाने में गया, तो हिन्दुस्तानी नौकर दिखायी दिये। इससे मुझे खुशी हुई। मैंने उनसे बातचीत की। हब्दियों से मिला। उनकी रहन-सहन में रुचि पैदा हुई। इसमें थोड़ा समय चला गया। डेक के दूसरे भी कई यात्री थे। मैंने उनसे जान-पहचान कर ली थी। वे रसोई बनाने और आराम से भोजन करने के लिए नीचे उतरे थे। मैं उनकी नांव में बैठा। बन्दर में ज्वार काफी था। हमारी नाव में बोझ ज्यादा था। प्रवाह का जोर इतना अधिक था कि नांव की रस्सी स्टीमर की सीढ़ी के साथ किसी तरह बँध ही नहीं पाती थी। नाव सीढ़ी के पास पहुँचती और हट जाती। स्टीमर खुलने की पहली सीटी बजी। मैं घबराया। कप्तान ऊपर से देख रहा था। उसने स्टीमर को पाँच मिनट के लिए रुकवाया। स्टीमर के पास ही एक छोटीसी नाव थी। एक मित्र ने उसे दस रुपये देकर मेरे लिए ठिक किया, और इस छोटी नाव ने मुझे उस नाव में से उठा लिया। स्टीमर की सीढ़ी उठ चुकी थी। मुझे रस्सी से ऊपर खींच लिया गया और स्टीमर चल दिया। दूसरे यात्री रह गये। कप्तान की दी हुई चेतावनी का अर्थ अब मेरी समझ में आया।

लामू से मुम्बासा और वहाँ से जंजीबार पहुँचा। जंजीबार में काफी ठहरना था - आठ या दस दिन। वहाँ नये स्टीमर पर सवार होना था।

मुझ पर कप्तान के प्रेम का पार न था। इस प्रेम ने मेरे लिए उलटा रूप धारण किया। उसने मुझे अपने साथ सैर के लिए न्योता। एक अंग्रेज मित्र को भी न्योता था। हम तीनों कप्तान की नाव पर सवार हुए। मैं इस सैर का मर्म बिलकुल नहीं समझ पाया था। कप्तान को क्या पता कि मैं ऐसे मामलों में निपट अजान हूँ। हम लोग हब्शी औरतों की बस्ती में पहुँचे। एक दलाल हमें वहाँ ले गया। हम में से हरएक एक-एक कोठरी में घुस गया। पर मैं तो शरम का मारा वहाँ गुमसुम ही बैठा रहा। बेचारी उस स्त्री के मन में क्या विचार उठे होंगे, सो तो वही जाने। कप्तान ने आवाज दी। मैं जैसा अन्दर घुसा था वैसा ही बाहर निकला। कप्तान मेरे भोलेपन को समझ गया। पहले तो मैं बहुत ही शरमिंदा हुआ। पर मैं यह काम किसी भी दशा में पसन्द नहीं कर सकता था, इसलिए मेरी शरमिन्दगी तुरन्त ही दूर हो गयी, और मैंने इसके लिए ईश्वर का उपकार माना कि उस बहन को देखकर मेरे मन में तनिक भी विकार उत्पन्न नहीं हुआ। मुझे अपनी इस दुर्बलता पर घृणा हुई कि मैं कोठरी में घुसने से ही इनकार करने का साहस न दिखा सका।

मेरे जीवन जीवन की ऐसी यह तीसरी परीक्षा थी। कितने ही नवयुवक शुरू में निर्दोष होते हुए भी झूठी शरम के कारण बुराई में फँस जाते होंगे। मैं अपने पुरुषार्थ के कारण नहीं बचा था। अगर मैंने कोठरी में घुसने से साफ इनकार किया होता, तो यह मेरा पुरुषार्थ माना जाता। मुझे तो अपनी रक्षा के लिए केवल ईश्वर का ही उपकार मानना चाहिये। पर इस घटना के कारण ईश्वर में मेरी श्रद्धा बढ़ी और झूठी शरम छोड़ने की कुछ हिम्मत भी मुझ में आयी।

जंजीबार में एक हप्ता बिताना था, इसलिए एक घर किराये से लेकर मैं शहर में रहा। शहर को खूब घूम-घमकर देखा। जंजीबार की हरियाली की कल्पना मलाबार को देखकर ही हो सकती है। वहाँ के विशाल वृक्ष और वहाँ के बड़े-बड़े फल वगैरा देखकर मैं तो दंग ही रह गया।

जंजीबार से मैं मोजाम्बिक और वहाँ से लगभग मई के अन्त में नेटाल पहुँचा।

-'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.९२-९५, क्रमशः

●●●

बेजोड़ उदाहरण

जब हमारे युग सभी के सभी राजाधिराज और सेनापति, जो आज इतना शोर करते हैं और जीवन के नाटक में जिन्हें इतना प्रमुख स्थान प्राप्त है, वे सब विस्मृति के गर्भ में समा चुकेंगे, महात्माजी फिर भी गौतम बुद्ध के बाद सबसे बड़े भारतीय और ईसा के बाद सबसे बडे मानव के रूप में जीवित और सम्मानित रहेंगे।

गाँधीजी ने भारतीय जनता को अपना संग्राम जारी रखने के लिए अस्त्र प्रदान किए। ये ऐसे अस्त्र थे, जिनकी शक्ति अकल्पनीय थी, जो अंतिम विजय की गारंटी देनेवाले थे, और भगवान की कृपा से, गाँधीजी ने जीवनकाल में ही ऐसी विजय प्राप्त कर ली, जिसे वे देख भी सके। मानव-जाति के इतिहास में गाँधीजी का अहिंसात्मक प्रतिरोध का कार्यक्रम अनुपम है। खुद यह सिद्धान्त कि बुरे का नहीं, बुराई का विरोध करो और अपने शत्रुओं से प्रेम करो, कोई नया नहीं है। इसकी प्राचीनता कम-से-कम इतनी तो अवश्य है, जितनी कि 'गिरि-प्रवचन' में नजारथ के ईसा की शिक्षाएँ। लेकिन गाँधीजी ने वह किया जो पहले कभी नहीं किया गया था। अबतक यह निष्क्रिय प्रतिरोध के सिद्धान्त इक्के-दुक्के व्यक्तियों या छोटे-छोटे समूहों तक ही सीमित थे। गाँधीजी ने इस विशिष्ट प्रकार के सिद्धान्त के असंख्यों मनुष्यों द्वारा प्रयोग में लाये जाने के लिए अनुशासन और कार्यक्रम का प्रतिपादन किया। दूसरे शब्दों में उन्होंने इक्के-दुक्के व्यक्तियों के लिए, या छोटे-छोटे व्यक्ति-समूहों के लिए नहीं, अपितु एक पूरे राष्ट्र के लिए कार्यक्रम रखा और मैं कहता हूँ कि यह बात मानव-जाति के लिए एकदम नई है।

१५ अगस्त १९४७ को भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति के साथ गाँधीजी के जीवन के द्वितीय काल के महत्व का सार महान विद्वान डॉ. फ्रांसिस नीलसन द्वारा लिखित पुस्तक ''यूरोप की पीड़ा'' (ट्रेजेडी ऑफ यूरोप) के इस अंश को उद्धत करके आपके सामने उपस्थित करता हूँ: ''गाँधीजी अनुपम है। उनकी स्थिति के किसी अन्य व्यक्ति का, जिसने एक महान साम्राज्य को चुनौती दी हो, दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। वे कार्यक्षेत्र में और बुद्धि में सुकरात के समान थे। उन्होंने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिंसा का सहारा लेनेवाले राजनीतिज्ञों के तरीकों के थोथेपन को विश्व के सामने रखा। इस संघर्ष में आत्मिक संपूर्णता ने राज्य-बल के भौतिक प्रतिरोध पर सफलता पाई। यही गाँधीजी की सफलता थी और यही उनकी विजय। इतिहास में यही उनका स्थान निश्चित करती है।

- 'गाँधी-श्रद्धांजलि ग्रंथ' से साभार, पृष्ठ क्र. १३३-१३४

●●●

'Tatva' of Gandhi's philosophy remains same, 'tantra' will differ

Today, the 'Tatva' of Gandhi's philosophy remains relevant, whereas the 'tantra' of its practice may differ. Serving as our reference point, we must learn to grasp Gandhi's eternal truth or tatva, and emulate it in our daily routine to enhance the functioning of all aspects of Indian civil society.

- Editor

Gandhi's philosophy and work has to be understood as 'tatva' and 'tantra'. The tatva - the essence of truth and non-violence - remains in the society. Gandhi talking about peace and harmony is tatva which is applicable in the computer age as well.

The question is not whether Gandhi is relevant or not, the question is we will still able to relate to Gandhi. Gandhi stands as a reference point. Gandhi says that he has never said anything new. This tatva has remained with humanity and will remain. Gandhi does not take up arms. He makes a statement that you are unjust and that is a takeaway. He upholds truth and non-violence.

Even as we celebrate Gandhi's 150 years, let us not presume that his philosophy is not there. It will remain. The tantra may differ. Khadi is tantra. The believers of Gandhian philosophy may or may not wear khadi.

We need to change the way education is imparted. According to us, education has to change according to the society. However, it is education that changes the society. We need to get the tatva of Gandhi in education.

Gandhi demonstrated that things start from self. We have to become practitioners of whatever you know of Gandhi. There are so many things that he did. A simple practice can be to give work to one's hands. It gives you exercise, it saves water and you clean your neighbourhood. What is Swachh Bharat Abhiyan? It means to involve yourself. Using a public transport is very much Gandhian. Walking up to a distance of less than two kilometres is also very much Gandhian.

Gandhi had an important role to play in education. In the first five years of returning to India, he set up the Gujarat Vidyapeeth. He had a complete concept and hence Gujarat Vidyapeeth was catered to students from kindergarten to PG. It was not a centre of higher education. It was about educating the next generation, preparing the citizens for research and philosophy. Gandhi wanted to train volunteers for India's independence and be constructive workers.

The Gujarat Vidyapeeth created self employable workers. It functioned as per the original ideas until 1963 when the University Grants Commission stepped in and it almost became a mainstream university. It is a deemed university. The original values have remained—working for others, caring for others.

Students of the Gujarat Vidyapeeth have a niche place in the civil society organisations and when it comes to government jobs, if they have cleared the examinations and everything is equal then they are preferred as government employees for their better values. This is the strength that is left.

This educational institute should again evolve and go back to the basis. The tantra would be different, having modern technology but the tatva will remain same. It will be about building strength in students so that they form a new society. A society where there is no forced urbanisation. "Push out" has to stop.

For me, Gandhi was a person true to self and practised his conviction.

- Sudarshan Iyengar, Director, Gandhi Research Foundation and Former Vice-chancellor, Gujarat Vidyapeeth

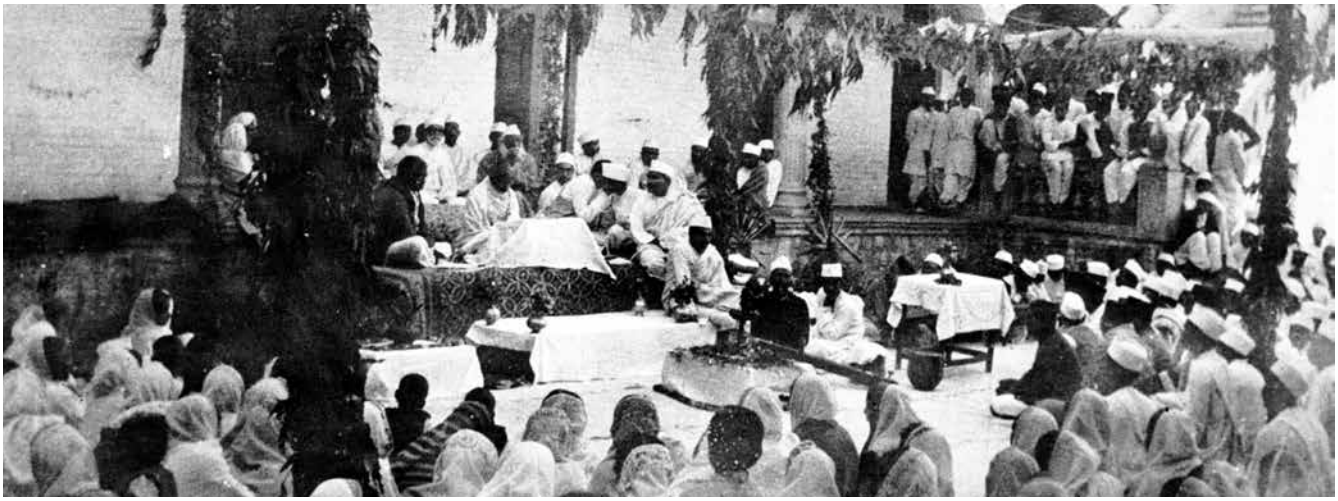

Mahatma Gandhi presided over the seventh convocation of the Gujarat Vidyapith, January 15, 1929.

नीति नियम सरकार के लिए भी बंधनकारी होना चाहिए।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गंभीर लेखक एवं चिंतक थे। हम आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'गतिशील व प्रभावी समाज-रचना हेतु अपेक्षित परिवर्तन' विषयक यह महत्त्वपूर्ण लेख का शेष भाग पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। **– संपादक**

डॉ. भवरलालजी जैन

कानूनों को रद्द कराने का अधिकार: जो अधिकार जनता ने अपने जनप्रतिनिधियों को प्रदान किए हैं उनमें से अधिकांश महत्त्वपूर्ण अधिकारों का यद्यपि हस्तांतरण कर दिया गया है फिर भी जनता को उन्हें अपने पास सुरक्षित रखना चाहिए। वर्तमान परिस्थितियों में कालातीत या कष्टप्रद लगने वाले कानूनों को रद्द करने का अधिकार जनता के हाथ में नहीं है। जनहित याचिका के अंतर्गत इन सभी बातों का समावेश नहीं होता है। उचित रीति का निर्माण करके कानूनों में सुधार एवं संशोधन करने की प्रक्रिया निर्विघ्न रूप से चलती रहे, इसलिए इन अधिकारों का उपयोग होना परमावश्यक है। वर्तमान काल में सरकार की मर्जी और विधायिका द्वारा अधिकृत किए बिना कोई कानून रद्द नहीं होता है। प्रत्येक कानून के लिए यदि समय की मर्यादा निर्धारित कर दिया जाए तो यह कार्य अधिकांश मात्रा में अपने आप हो जाएगा। परंतु पीड़ित व शोषित नागरिक या किसी वर्ग विशेष के लिए कोई कानून कष्टप्रद प्रमाणित होता हो, तो उसे पूर्व निर्धारित रीति और नियमों के आधार पर रद्द करने का प्रावधान होना चाहिए। यदि ऐसी परिस्थितियों में न्यायालय में न्याय माँगने का प्रावधान न हो तो उसका निर्माण होना चाहिए। इससे जनप्रतिनिधियों के कानून निर्माण अधिकारों में बाधा न पहुँचाते हुए भी कानूनों को रद्द करने के जनता के अधीन हो सकेंगे।

निर्धारित समय सीमा में न्याय प्राप्त करने का अधिकार: न्याय प्रक्रिया में विलंब होना, न्याय नकारने से भी अधिक कष्टप्रद है। आरोप-पत्र दाखिल होने में कई वर्ष का लगना, किसी की पेशी होने के पश्चात वर्षों तक अंतिम आदेश का न मिलना, फैसले की जानकारी पीड़ित पक्ष को न देना, छोटी-छोटी बातों के लिए भी कष्टप्रद कानूनों का प्रावधान करना, प्रावधानों का अनुपालन न होने की दशा में अत्यधिक जुर्माना या सजा थोपना और उसके मुकाबले सरकारी अधिकारियों द्वारा मूल्यांकन करने के लिए या न्यायदान के लिए बरसों लग जाने पर भी उन पर किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी का न होना इत्यादि सभी बातें समाज में अस्थिरता और अशांति का वातावरण निर्माण करती हैं। परिणामस्वरूप विलंब, भ्रष्टाचार और अधिकारियों की तानाशाही को यह बढ़ावा देती हैं। इस परिस्थिति में रामबाण उपाय के तौर पर, न्यायालय हो या सरकार का मामला, प्रत्येक मामले में न्याय प्रक्रिया के लिए समय सीमा का निर्धारण किया जाना चाहिए। शिकायत या अपराध का स्वरूप दीवानी हो या फौजदारी उसका निर्णय और न्याय, निश्चित अवधि में ही मिलना चाहिए और वह नहीं मिले तो उसका उत्तरदायित्व संबंधित व्यक्ति को देना चाहिए। जिसके लिए सजा का प्रावधान होना चाहिए।

समय सीमा में न्याय मिलने लगा तो कोर्ट-कचहरी की शरण में जाने व्यर्थ के झगड़े-बखेड़े करने की प्रवृत्ति पर भी रोक लगेगी। समाज में भ्रष्टाचार का नंगानाच और कुहराम काफी मात्रा में कम होगा। समाज में एक आश्वस्ति का भाव आएगा, जिससे जीवन का आनंद द्विगुणित हो जाएगा। विशेष रूप से आम नागरिक को सम्मान और प्रतिष्ठा मिलेगी जिससे वह अद्‌भुत आनंद का अनुभव करेगा। बरजोर शक्तियों के लिए समाज और सरकार को बाध्य करना सहज हो जाएगा। सज्जनशक्ति का सामूहिक बल बढ़ने से उसे भी अपनी सामर्थ्य का अनुभव होगा। दुर्जन शक्ति की दुष्प्रवृत्तियों के लिए यह चुनौती ही सिद्ध होगा।

सारांश यह है कि सरकार ने जनता या आम नागरिकों के लिए जो नीति नियम बनाए हैं, वही नीति नियम स्वयं के लिए भी बंधनकारी होना चाहिए। समय सीमा का बंधन जनता जनार्दन पर लगाना हो तो सरकार अपने और अपने अधिकारियों पर भी उतनी ही सख्ती से लगाए। सरकार यदि न्यायी नहीं है तो जनता से उचित व्यवहार की अपेक्षा करना उचित नहीं होगा।

व्यावसायिक, तकनीकी व कृषि आधारित शिक्षा का अधिकार: मनुष्य के जीवन में शिक्षा के महत्व को अलग और विस्तार से वर्णित करने की आवश्यकता नहीं है। सकल बजट व कुल आय का कम से कम कितना प्रतिशत शिक्षा पर खर्च हो इस विषय में कानूनी प्रावधान होना चाहिए। इसके पश्चात शिक्षा पर होने वाले कुल खर्च में से मुख्यत: व्यावसायिक, तकनीकी और कृषि शिक्षा को प्रधानता देकर उसको अधिकतम भाग दिया जाना चाहिए। पिछले कई दशकों से तकनीकी शिक्षा को विशेष महत्व दिया जा रहा है। उसकी तुलना मे व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल नहीं दिया गया है। व्यावसायिक शिक्षा को प्रधानता देने से स्वरोजगार और स्वावलंबन का मार्ग प्रशस्त होगा।

क्रमश:

चोपड़ा क्लस्टर के शेणपाणी गाँव के किसानों को 'संकलित कृषी प्रकल्प' की जानकारी देते हुए संजय सोन्जे, साथ ही मेजर डेविड, आशुतोष कुमठेकर, सागर चौधरी

बा-बापू १५० 'संकलित कृषी प्रकल्प'

भारतीय किसान की वर्तमान स्थिति हम सभी के सामने दयनीय रूप में दिखाई देती है। उनके कई कारण है, उनमें दिन प्रतिदिन खेती का कम होना, अनियमित बारिश, पारंपरिक खेती पद्धति से आधुनिक खेती पद्धति की ओर रुझान कम होना, किटनाशक, उर्वरक आदी में खर्च की बढोतरी। इन सभी घटकों के माध्यम से स्थिति यह हुई की आमदनी में बढौती नहीं हुई पर खर्चे बढने लगे। नतिजा यह प्राप्त हुआ या तो हमारे किसान खेती छोडने। दुख की बात तो यह है कि ऐसी स्थिति किसान यह भी नहीं चाहेगा कि उनका बेटा भी खेती करे। ऐसी मजबूरन स्थिति में खेती जो पहले कभी हमारा गौरव बढाती थी वह आज खतरे में आ गई है। ऐसी स्थिति में किसानों के लिए अगर कोई शाश्वत मार्ग निकाला जाए तो किसान और कृषि दोनों को बचाया जा सकता है। बा-बापू १५० के अंतर्गत गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने 'संकलित कृषि प्रकल्प' को साकार किया है।

संकलित कृषि प्रकल्प:

१) इस प्रकल्प में किसान को अपने खेत के कुछ हिस्सों में विभिन्न तरह की फसल लगानी है, इसमें फल, सब्जी, धान्य, दलहन आदी। इस तरह से एक चक्र तैयार करना है ताकी जमीन में आवश्यक पोषक तत्त्व का प्रमाण बरकरार रहे, ऐसा करने से जमीन की गुणवत्ता सुधरेगी और किट पर नियंत्रण करने में सरलता रहेगी।

२) इस प्रकल्प के अंतर्गत किसान अपने खेत में पानी के पर्याप्त संसाधन, सेन्द्रिय उर्वरक का छोटा प्रकल्प होगा जो पशु के गोबर एवं मूत्र से तैयार होगा, ऐसा करने से उनकी दूध की जरूरत भी पूर्ण होगी और पूरक व्यवसाय के अंतर्गत कृषि को भी फायदा होगा। इनमें बीज संग्रह का भी समावेश किया गया है, ऐसा करने से वे अपनी जरूरत के संसाधनो को विकसित कर कई मामलों में स्वावलंबन प्राप्त कर सकेगें।

३) किसान आज जो खेती करता है उनमें खाद्य सामग्री कम या नहींवत होती है। आज वह जो फसल लगाता है वह वे खा नहीं सकते है और जो उनको खुराक के लिए चाहिए वह फसल वह नहीं लगाता। इससे यह स्थिति निर्माण हुई की उनको अपने लिए आवश्यक सामग्री बाजार से खरीदनी पडती है। इस प्रकल्प के अंतर्गत वे अपने जीवन निर्वाह के लिए जरूरी सामग्री का उत्पादन करेगा। ताकी उनको ताजे फल, सब्जियां और धान्य मिल सकेंगे। ऐसा करने से स्वयं का और अपने परिवार को पोषणयुक्त आहार प्राप्त होगा और जो रुपए इन सब खरीदने में चले जाते थे उनकी बचत होगी। जिससे आर्थिक के साथ-साथ आरोग्य पूर्ण समृद्ध जीवनशैली को प्राप्त करेगा।

कार्यप्रणाली:

फाउण्डेशन के कार्यक्षेत्र अंतर्गत समावेश जलगाँव का चोपडा तहसील के कुछ गाँवों से इस प्रकल्प का आरंभ किया गया है। २० किसानों का एक गुट बनाकर उनके पास उपलब्ध जमीन को चार हिस्सों में विभाजित किया गया। एक भाग में प्रादेशिक अनुरूप फल के पौधे जैसे आम, अमृत, सिताफल, की लागत की गई है। दूसरे भाग में सब्जियां, इसमें मंडुवा पद्धति का उपयोग किया गया ताकी सब्जी की फसल को पर्याप्त जगह के साथ उनमें सड़न प्रक्रिया कम होगी। तीसरे भाग में दलहन व धान्य की फसल लगाई गई है। और चौथे भाग में जल व्यवस्थापन के लिए खेत-तालाब और खेती पूरक उद्योग जैसे पशुपालन, केंचुआ खाद्य का निर्माण किया गया है। किटनाशक के लिए अधिक खर्च ना करते हुए उनमें ट्रेप कार्ड का इस्तेमाल तथा मिश्र फसले लगाई गई है, इस दृष्टि से भी खर्च में कटौती करने का प्रयास किया जा रहा है।

संकलित कृषि प्रकल्प के अंतर्गत उपरोक्त सभी हिस्सों का योग्य नियोजन के साथ अमलीकरण किया गया है।

इस प्रयास से स्वावलंबी, स्वदेशी और शाश्वत कृषि पद्धति कि दिशा में निश्चित परिणाम दिखाई देंगे। फाउण्डेशन के इस प्रकल्प के आधार पर गाँधीजी कल्पित ग्राम स्वराज की संकल्पना कि दिशा में प्रत्यक्ष कार्य के ठोस कदम दिखाई दे रहे है। ♦♦♦

वावडदा गाँव में खेती वर्ग में शामिल हुए किसानों को मार्गदर्शन करते हुए संगीता सोनवणे

खेती की पाठशाला से किसानों को मिली आधुनिक खेती की जानकारी

वावडदा गाँव में शासकीय कृषि विभाग की ओर से किसानो के लिए खेती विषय में मार्गदर्शन मिलने हेतु हर इस बुधवार के दिन एक खेती वर्ग का आयोजन किया जाता है। आज के दिन कृषि सहायक संगीता सोनवणे और सुरेखा सपकाळे ने नियोजित कार्यक्रम में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के साथियों को आमंत्रित किया। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की ओर से सुधीर पाटील और चेतन पाटील ने सहभाग लिया।

इस कार्यक्रम का आयोजन स्थानिक किसान के खेत पर रखा गया था। यह इसलिए ताकी किसानों को प्रत्यक्ष मार्गदर्शन मिल सके। इस साल खेत में कपास और मक्का की बुवाई की थी। फसल की जांच के बाद कपास की फसल आरोग्यमय दिखाई दीया लेकिन मक्का फसल में लष्कर नामक किड़ का प्रादुर्भाव हुआ है ऐसा दिखाई दिया। किसानों को निंबोळी अर्क के इस्तेमाल की सलाह दी गयी।

साथ ही साथ शासकीय पिक विमा योजना में सहभाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। किसानों ने तण (घाँस) के प्रादुर्भाव की समस्या बताई। और उसका पारंपरिक हल याने उसे जड़ से उखाड़ फेकने की बात पर जोर दिया। लेकिन कोई तणनाशक (रासायनिक फवारे) का इस्तेमाल करना जमीन और किसान की सेहत के लिए घातक होगा ऐसा चर्चा का सुर रहा।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के साथियोंने संस्था के कार्यक्रम के बारे में किसानों के सामने अपनी बात रखी। बा-बापू १५० ग्रामविकास कार्यक्रम में किसानों के समूहों के लिए कृषितज्ञों के साथ बातचीत का सिलसिला, वॉट्सअप ग्रुप के माध्यम से मार्गदर्शन दिया जा सकता है ऐसी बात सामने रखी। इस कार्य के लिए किसानो का संगठन बनाने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

कम से कम खर्चे में अच्छे परिणाम इस विषय में केंचुआ खाद के निर्माण कार्य का महत्त्वपूर्ण पाठ जीआरएफ के साथियों ने किसानों की पाठशाला में प्रस्तुत किया। इस पाठ के बाद उपस्थित सारे किसानों ने केंचुआ खाद निर्माण में रुचि दिखाई। आगे के मार्गदर्शन और सहायता और प्रोत्साहन के लिए संस्था किसानों के साथ सदैव खड़ी रहेगी लेकिन पहल किसानों की ओर से होनी चाहिऐ। जैसे धानोरा बु. स्थित उपक्रम को भेंट देना, केंचुआ खाद के लिए जगह सुनिश्चित करना, योग्य आकार के बेड निर्माण करना, बेड के तल में प्लॉस्टिक या फ्लेक्स का आच्छादन होना, बेड पर हर दिन गीला कचरा गोबर की व्यवस्था आदि सारे तयारियां मार्गदर्शन के तहत होने पर संस्था की ओर से केंचुआ बीज के लिए सहायता दी जाऐगी। पाठशाला में वावडदा गाँव से माणिक इच्छाराम धनगर, लक्ष्मण देवराम पाटील, पोपट फकिरा पाटील, कोमल देवराम पवार, विक्रम शिवराम पवार, लहु लाला पाटील, ईश्वर सुधाकर येवले और संजय राजपूत ने सहभाग लिया। ♦♦♦

आषाढी एकादशी के निमित्त गाँव में निकली पालकी

आषाढ़ी एकादशी के अवसर पर जलगाँव जिला के जलके गाँव में फाउण्डेशन और उच्च माध्यमिक शाला के माध्यम से पालकी मिरवणूक का कार्यक्रम संपन्न हुआ। पालकी की शुरुवात छोटे बच्चों ने पारंपरिक वारकरी संप्रदाय जैसा पोशाक और लड़कियों ने छोटे तुलसी वृंदावन माथे के ऊपर लेकर शुरुवात की। पूरे गाँव में गलियों से जाते हुए स्थानिक लोगों ने पालकी मिरवणूक का स्वागत किया और जगह-जगह पर पालकी को अभिवादन किया। सरपंच, ग्रामसेवक, ज्येष्ठ बुजुर्ग, पुरुष और महिलाओं ने सहभाग लिया। स्कूल के मुख्याध्यापक कोळी, शिक्षकगण और फाउण्डेशन के कार्यकर्ता मयुर गिरासे ने इस कार्यक्रम में अपना योगदान दिया। ♦♦♦

आषाढी एकादशी के पावन अवसर पर गाँव के बच्चों ने निकाली हुई पालकी मिरवणूक

शेरी गाँव में पौधें का रोपण करते हुए आबा पाटील, मेजर डेविड एवं ग्रामस्थ

वैजापूर में पौधा रोपण के अवसर पर उपस्थित वन अधिकारी, ग्रामस्थ एवं कार्यकर्ता

पर्यावरण दिवस पर पौधों का रोपण

पर्यावरण हमारी जीवनशैली का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, जैसे गाँधीजी ने कहा कि, पृथ्वी हमारी जरूरतों को पूरा करती है, किंतु किसी एक व्यक्ति की लालच को भी पूरा नहीं कर सकती। इस संकल्पना के आधार पर हम जितना उपभोग करते व सीमित मात्रा में होना चाहिए और पर्यावरण पूरक तत्त्वों के पूर्ति से उनको समृद्ध बनाने की जिम्मेदारी में हमारा सहभाग होना चाहिए। फाउण्डेशन जैन इरिगेशन की मदद से हर साल कई पौधे लगाता है और आसपास के गाँवों के हमारे भाई-बहनों को भी इस कार्य के लिए प्रेरित करते है। इस श्रृंखला में वर्ष २०१९ में वृक्षारोपण कार्यक्रम किए गए उनकी एक झलक यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

वैजापूर (ता. चोपडा)

महाराष्ट्र सामाजिक वनीकरण विभाग की ओर से ३३ करोड़ वृक्ष लागत कार्यक्रम के अंतर्गत चोपड़ा फॉरेस्ट रेंज में वैजापूर परिक्षेत्र में १ जुलाई २०१९ को वनक्षेत्रपाल कुवर की टीम के साथ पौधे लगाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। चोपडा क्लस्टर के वैजापूर प्राथमिक शाला के ५ वीं कक्षा तक के बच्चों को साथ में लेकर आशुतोष कुमठेकर, चांदनी गोस्वामी, पद्मावती ने पाठशाला के नजदीक रास्ते के किनारे पौधों का रोपण १ जुलाई २०१९ को किया।

शेरी (ता. धरणगांव)

८ जुलाई के दिन आयोजित कार्यक्रम में शेरी गाँव में स्थानिक युवा और ग्रामवासियों ने बड़ी संख्या में वृक्षारोपण किया। लगाए गए पौधों की जिम्मेदारी एक-एक युवक को दी गई है।

कुऱ्हाडदा गाँव के प्राथमिक शाला में वृक्षारोपण

कुऱ्हाडदा गाँव के प्राथमिक शाला में फाउण्डेशन के माध्यम से तथा मुख्याध्यापक भोसले और अन्य शिक्षकगण की मदद से वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया।

रामदेववाडी में वृक्षारोपण का कार्यक्रम

रामदेववाडी वनक्षेत्र में समपातली चर (सीसीटी) होने के बाद १ जुलाई से १५ जुलाई २०१९ तक कुल बड़ी मात्रा में पौधों की लागत गाँव के युवाओं को संगठित की गई। करीब २६००० से अधिक पौंधे लगाए गए। संत्रे, नीम, शिसम, जामून, गुलमोहर आदि का समावेश है।

इस उपक्रम में मेजर डेविड, आशुतोष कुमठेकर, राहुल, विक्रम अस्वार, प्रशांत सूर्यवंशी, मयुर गिरासे, चांदनी तथा पद्मावती अपना योगदान दिया।

सीडबॉल का नाविन्यपूर्ण प्रयोग

पी. जी. डिप्लोमा की छात्रा प्रियंका पराशर ने अपनी एनजीओ के द्वारा चार प्रकार का जंगली बीज माटी में मिलाकर छोटे-छोटे सीड बॉल बनाए थे।

नीम, गुलमोहर, रीठा और बेल बीज का उपयोग किया गया था। शेरी गाँव में यह सीड बॉल का उपयोग खेती के बांध के उपर रास्ते के किनारे लगाने के लिए युवाओं ने किया। ♦♦♦

वृक्षारोपण के बारे में शेरी गाँव के युवाओं को जानकारी देते हुए मेजर डेविड

शेरी और रामदेववाडी में स्पोर्ट्स क्लब का निर्माण

रामदेववाडी में युवाओं का संगठन बनाकर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने जैन स्पोर्टस अकादमी की मदद में रामदेववाडी गाँव में स्पोर्टस क्लब बनाया है। जैन स्पोर्टस क्लब के अरविंद देशपांडे ने १४ जुलाई २०१९ को युवाओं की मीटिंग को संबोधित करते हुए भारतीय मैदानी खैलों की आवश्यकता, एशियाड, ऑलंपिक में हमें मिलनेवाली असफलता कम करने के लिए हमारे गाँव के युवाओं में स्पोर्ट क्लब बनाकर तथा मैदान बनाकर जोश और जागृति पैदा करने का अहवान किया। फिलहाल श्रमदान से रामदेववाडी में भारतीय खेलों का मैदान तैयार हो गया है। कबड्डी, व्हॉलीबॉल, खो-खो, क्रिकेट जैसे खेलों के लिए गाँव के युवा आरंभ कर रहे हैं।

शेरी में फाउण्डेशन ने जैन स्पोर्टस एकेडमी की मदद लेते हुए भारतीय खेलों का महत्त्व और मैदान की आवश्यकता पर जोर दिया। ♦♦♦

रामदेववाडी में स्पोर्टस क्लब के निर्माण हेतू जानकारी देते हुए अरविंद देशपांडे

खर्ची प्राथमिक शाला में सब्जी पौधों की लागत करते हुए विद्यार्थी

खर्ची के प्राथमिक शाला में न्यूट्रीशनल गार्डन में सब्जी लागत

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के मार्गदर्शन में चौथी और पाचवीं कक्षा के बच्चों को लेकर न्यूट्रीशनल गार्डन में बैंगन, मिर्च जैसी दैनंदिन लगनेवाली सब्जी की लागत पूरी हुई। फाउण्डेशन के कार्यकर्ता प्रशांत सूर्यवंशी, मयुर गिरासे ने दक्षिण उत्तर सरी वरंबा के ऊपर टपक सिंचन की मदद से ऊपर की लागत की। उसका फायदा यह है, कि हरेक पौधा दक्षिण उत्तर दिशा में पर्याप्त मात्रा में बढ़कर ज्यादा सब्जी देगा। प्राथमिक शाला के मध्याह्न भोजन में इन्हीं सब्जियों का उपयोग होगा।

इस कार्य में पाठशाला के मुख्याध्यापक चित्ते और शिक्षकगण का सहयोग प्राप्त हुआ। ♦♦♦

छात्राओं को दी पंचायत राज व्यवस्था की जानकारी

राजीव गाँधी नॅशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ यूथ डेवलपमेन्ट, चैन्नई से ५ इन्टर्नशीप के लिए फाउण्डेशन में एक महिने के लिए आए थे। इस समय के दौरान शेरी, कुर्हाडदा, रामदेववाडी, जलके और खर्ची गाँव में लोगों के साथ पंचायत राज व्यवस्था के ऊपर पर्याप्त जानकारी दी। उन्होंने ग्रामपंचायत, ग्रामसभा, पंचायत समिति, मानवाधिकार, मूलभूत मानवाधिकार, लोकायुक्त, लोक अदालत ऐसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर पीपीटी के माध्यम से गाँव के बुजुर्ग, युवा और महिलाओं के सामने विषय रखे। विस्तार से जानकारी मिलने के बाद चर्चा और प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम चलता था। सभी गाँववालों ने इस विषय के प्रति अच्छी जानकारी मिलने के लिए गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन का आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में ऐसी ग्रामसभा पंचायतराज व्यवस्था मजबूत करने में योगदान देने का निश्चय किया।

पाँच गाँव के कार्यक्रम के व्यवस्थापन में मेजर डेविड, डॉ. जॉन चैल्लादुरै, राहुल लांबोळे, मयुर गिरासे, विक्रम अस्वार, प्रशांत सूर्यवंशी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ♦♦♦

जलके गाँव में पंचायत राज की जानकारी देते हुए अहमद मुझफ्फर

पाठकों के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत **– संपादक**

Dear Sir,

Greetings from Nagpur!

Every issue of 'Khoj Gandhiji ki' is interesting and full of relevant information.

July 2019 issue is unique with coverage of international activities and wonderful snaps have given publicity to your great activities. Kudos to this noble work and best wishes always.

Thanks and Best Regards.

Aprup Adawadkar,
Gandhian Research (PhD) Scholar RTMNU, Nagpur

♦♦♦

संग्रहालय के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय देखने आए हुए अतिथियों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ अभिमत **– संपादक**

It gave me and my family a nice experience of touring through the inspiring life of the Mahatma. Thank you GRF.

Rambhau P. Pawar, *DIG, RPF-Central Railway, Nasik*

It was very interesting to truly get to know the history and life of Gandhi. I learned much about his ways to achieve complete freedom and peace.

Haico Seepeld, *Rotary Youth exchange, Germany*

It was a great pleasure visiting the amazing museum on Gandhiji's life and witnessing closely india's freedom movement. It inspires us to embrace these values and to strive for a peaceful and unified nation.

Dr. Rakshith Ra, *The campco chocolate factory, Karnataka*

Hearing Gandhiji's voice was my best experience here. Sarvodaya village is inspiring, and charkha spinning as well.

Karishma, *Kandivali, Mumbai*

♦♦♦

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

देवेंद्र फडणवीस, मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य
०७.०७.२०१९

डॉ. डी. पी. फुझाले, वैज्ञानिक, मुंबई
१६.०७.२०१९

हेमराज बागुल, जनसंपर्क अधिकारी, मुख्यमंत्री कार्यालय, महाराष्ट्र, २१.०७.२०१९

मुबारक, एमआरके ग्रुप, नायजेरिया
१५.०७.२०१९

रामभाऊ पवार, डी.आय.जी. आर.पी.एफ, सेंट्रल रेल्वे
२०.०७.२०१९

सखी मंच सदस्या, जलगाँव
१५.०७.२०१९

प्रो. सोनिया गहलोत, राजस्थान
०१.०७.२०१९

त्र्यंबक, नासिक से आए हुए ब्रह्मवृंद
२५.०७.२०१९

R.N.I. No. MAHBIL/2017/77584 / Postal Registration No.: JAL/421/2019-2021
Posted at Jalgaon head post office, from 2nd of every month, Date of publication: 28th of every month.

मोहन से महात्मा – चित्र शृंखला–२८

आगाखान महल

आगा खां पैलेस, पूना जहाँ महात्मा गाँधी को दो साल के लिए नजरबंद रखा गया था, १९४२–४४ ।

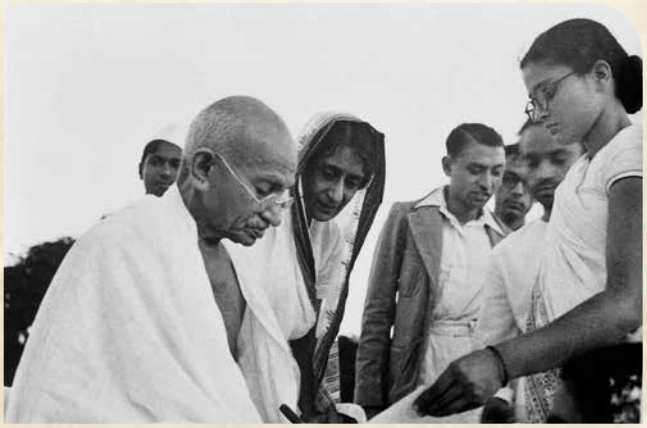

महात्मा गाँधी, आभा गाँधी, राजकुमारी अमृतकौर तथा अन्य जनों के साथ एक प्रार्थना सभा के बाद प्रार्थना संदेश देते हुए, आगा खां पैलेस, पूना १९४२।

कस्तूरबा का पार्थिव शरीर, पुना १९४४।

महात्मा गाँधी पूना के आगा खां पैलेस में कस्तूरबा की समाधि के पास प्रार्थना करते हुए, पुना १९४४।

गाँधीजी को पूना के आगा खान महल में नजरबंद कर दिया गया। भारी सुरक्षा से घिरे इसी महल में उनके साथ सरोजिनी नायडू, मीरा बहन और महादेव देसाई भी नजरबंद कर दिए गए। तीन दिनों बाद कस्तूरबा गाँधी और सुशीला नायर को भी उनमें शामिल होने की इजाजत दे दी गई। महादेव देसाई एका एक दिल का दौरा पड़ने से चल बसे। वे २५ वर्षों से गाँधीजी के सचिव और समर्पित साथी रहे थे और गाँधीजी उन्हें अपने बेटे की तरह प्यार करते थे। जिस तरह उनके शरीर का दाह–संस्कार किया गया वहाँ गाँधीजी ने पत्थर और मिट्टी की एक समाधी बनवाई। दिसम्बर १९४३ में कस्तूरबा बीमार पड़ी और अगले वर्ष फरवरी में वे गाँधीजी की गोद में सिर रखे चल बसीं। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार उनको अपने पति के हाथों से कते धागे की सफेद साड़ी पहनाकर उसी जगह दाह–संस्कार किया गया जहाँ पहले महादेव देसाई का किया गया था, और वहीं बगल में उनकी भस्म पर एक समाधि बना दी गई उनकी मृत्यू के साथ ६२ वर्षों का वह साथ छूट गया जो कष्ट और आंसू भरे अनेक संकटों में भी बना रहा था और समय के साथ और प्रगाढ़ हुआ था।

– महात्मा गाँधी

Printed Matter

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:

Gandhi Research Foundation
Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए **खोज गाँधीजी की** यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव–४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला* (*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)
प्रकाशन: २८ अगस्त, २०१९